वह
प्रतिज्ञा आपके

लिये है

सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है (रोमियों ३:२३)। पाप का परिणाम मृत्यु है– दोनों शारीरिक और आत्मिक, (रोमियों ६:२३)। पवित्र शास्त्र स्पष्ट सिखाता है कि जिस मनुष्य के जीवन में पाप है वह स्वर्ग में कदापि नहीं जा सकता (इब्रा. १२:१४)।

परमेश्वर का वचन हम से कहता है कि बिना रक्त बहाये मनुष्य के उद्धार की कोई आशा नहीं है (इब्रा. ६:१६-२६)। परमेश्वर ने नीचे पृथ्वी की ओर देखा और पाया कि संसार के पापों के लिये मरने योग्य कोई भला मनुष्य न था कि हमें अनन्त जीवन मिले। इसलिये परमेश्वर स्वयं संसार में आया-संसार के पापों के लिये मरने हेतु उसने मनुष्य शरीर धारण किया–जो यीशु कहलाया। पवित्र शास्त्र में यीशु को "इम्मानुएल" कहा गया जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ"। मती १:२१-२३, यशा ६:६; १ तिमु. ३:१६।

मनुष्य की हैसियत में यीशु हमारी नाई परखा तो गया तो भी निष्पाप निकला (इब्रा. ४:१५)। वह आया, कि हमें अनन्त जीवन मिले, उसने मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा दी। अपने संदेश में उसने घोषित किया कि, जब तक कोई जल (पानी का बपतिस्मा) और आत्मा से (पवित्र आत्मा से भरना) न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता (यूहन्ना ३:५)।

सब के पापों के छुटकारे के लिये यीशु सलीब पर मरा। जब भी वह हमारे नाई परखा गया तो भी वह निष्पाप निकला और इस प्रकार वह संसार के पापों के लिये एक योग्य बलिदान था। यीशु के लोहू बहाये जाने से हर एक को, जो उद्धार की योजना पर चलता है, (उसे) पापों की क्षमा मिलती है।

सलीब पर मृत्यु के पश्चात्, यीशु को कबर में रखा गया। तथापि तीसरे दिन भविष्यद्वाणी के अनुसार वह जी उठा, (लूका २४-४६)। पुनरुत्थान के पश्चात् यीशु ने चालीस दिन अपने चेलों के साथ परमेश्वर के राज्य के विषय में शिक्षा देते हुए बिताये। स्वर्गारोहण के थोड़े ही पूर्व यीशु ने अपने अनुयायिओं को आश्वासन दिया कि शीघ्र ही पिता की प्रतिज्ञा को उन पर भेजेगा, जो कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा है (लूका २४:४६)।

पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा उपरेली कोठरी में ठहरे हुए लगभग १२० चेलों के झुंड को मिला। जैसे वे ठहरे थे उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं, और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गये, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे, (भाषाएँ जो वे कभी न सीखे थे) प्रेरितों २:१-४।

उपरेली कोठी से आने वाली ध्वनि ने देखने वालों की एक उत्सुक भीड़ इकट्ठा की, जो एक दूसरे से पूछने लगी "इसका क्या अर्थ है?" प्रेरित पतरस ने भीड़ को कुछ क्षण प्रचार करने के पश्चात्, उद्धार की योजना को उनके सामने खोल दिया, "पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे"। और आगे उसने उनसे कहा: "क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिये भी है, जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।" प्रेरितों २:३८-३६.

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने जिस संदेश का प्रचार किया उसकी ओर ३,००० विश्वासियों ने ध्यान दिया और उसका प्रभाव अभी भी आज तक है। मन फिराने के इस संदेश में यीशु मसीह के नाम से पानी का बपतिस्मा में और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने में अभी भी उद्धार की

सामर्थ है । मन फिराने में मनुष्य अपने पाप से मुड़ जाता है, इस विश्वास से की यीशु ने सलीब पर उस के सब पापों की कीमत अदा कर दी है । ऐसा करने से वह अपना "पुराना मनुष्यत्व" मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ा देता है (रोमियों ६:६) । जब कोई यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लेता है, तब वह मसीह के साथ गाड़ा जाता है (रोमियों ६:३) ।

फिर जैसे परमेश्वर का आत्मा प्रवेश करता है वैसे विश्वासी अन्य-अन्य भाषाएँ बोलने लगता है जिस प्रकार आत्मा उसे बोलने की सामर्थ देता है । नये नियम में उद्धार का प्रत्येक विवरण ठीक इसी कार्य रीति का अनुसरण करता है (प्रेरित २:४; ८:१४-२०; १०:४४-४८; १६:१-६)

पवित्र शास्त्र हम से कहता है कि यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, हम में बसा हुआ है; तो उसके साथ अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा हमें दी गई है (रोमियों ८:९-११) । (पवित्र शास्त्र में) हम से कहा गया है ।"...और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे । तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे । कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे" (१ थिस्स. ४:१६, १७) ।

http://www.v-p-m.de